अंग्रेज-फ्रांसीसी संघर्ष
कर्नाटक के युद्ध

अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी कम्पनियाँ भारत में व्यापार करने आयी परंतु शीघ्र ही भारत की राजनीति में उलझ गई। इस राजनीतिक उलझाव के कारण दोनों के बीच 20 वर्षों तक लम्बा संघर्ष चला। जिसमें अंततः फ्रांसीसियों की हार हुई। इस संघर्ष (कर्नाटक युद्ध) ने सदा के लिये यह निर्णय कर दिया कि अंग्रेज ही भारत के स्वामी होंगे, फ्रांसीसी नहीं। यही कारण है कि कर्नाटक के युद्धों का भारतीय इतिहास में काफी महत्व है।

मुगल साम्राज्य जैसे ही कमजोर हुई भारत में कई क्षेत्रीय राज्य उद्भूत हुये। हैदराबाद भी उनमें से एक था जहाँ निजाम-उल-मुल्क आसफजाह ने अपने को अर्द्धस्वतंत्र शासक के रूप में स्थापित किया। कर्नाटक भी मुगल दक्कन एक सूबा था जो अब निजाम के अधीन था। लेकिन जिस प्रकार निजाम व्यवहारिक रूप से दिल्ली की सरकार से स्वतंत्र हो गया था उसी प्रकार कर्नाटक का नायब सूबेदार जिसे इस क्षेत्र का नवाब कहा जाता था वह भी अपने को निजाम के नियंत्रण से मुक्त कर लिया।

आगे कर्नाटक के नवाब सआदत खाँ ने अपने भतीजे दोस्त अली को निजाम की मंजूरी के बिना ही अपना उत्तराधिकारी घोषित करके अपने ओहदे को वंशानुगत बना दिया। 1740 ई. में मराठों ने कर्नाटक पर आक्रमण किया और यहाँ के शासक दोस्त अली को मार दिया एवं उसके दामाद चंदा साहब को बन्दी बना लिया। किसी शासक के अभाव में निजाम आसफजाह ने अपने निकट सम्बन्धी अनवरुद्दीन को कर्नाटक का नवाब बना दिया। मराठा आक्रमण के बाद यहाँ अव्यवस्था की स्थिति थी फिर भी अंग्रेज और फ्रांसीसी शांतिपूर्वक व्यापार में संलग्न रहे। यही नहीं 1740 ई. मेरिया थरेसा के आस्ट्रियाई उत्तराधिकार को लेकर

एवं अमेरिका उपनिवेश के झगड़े को लेकर यूरोप में अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों में युद्ध चल रहा था, फिर भी फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने भारत में शांति बनाये रखने के उद्देश्य से ब्रिटिश अधिकारियों से सम्पर्क किया लेकिन उन्होंने इसमें रुचि नहीं दिखायी।

लेकिन यह शांति ज्यादा दिनों तक नहीं रही तथा आस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध का प्रसार भारत में भी हो गया। गृह सरकारों की आज्ञा के विरुद्ध ही दोनों दलों ने 1746 ई. में युद्ध प्रारंभ कर दिये युद्ध की पहल अंग्रेजों की तरफ से हुई। इस तरह प्रथम कर्नाटक युद्ध का बिगुल बज गया।

बारनेट के नेतृत्व में अंग्रेजी नौसेना ने कुछ फ्रांसीसी जलपोत पकड़ लिये डूप्ले ने कर्नाटक के नवाब से अपने जहाजों की सुरक्षा की प्रार्थना की लेकिन अंग्रेजों ने नवाब की किसी बात पर गौर नहीं किया। अतः डूप्ले ने मॉरिशस के फ्रांसीसी गवर्नर लाबूर्डोने से सहायता मांगी। ला बुर्डोने ने अपने 3000 सैनिकों के बेड़े के साथ कोरोमंडल तट पर पहुँचकर 21 Sep 1746 को मद्रास पर अधिकार कर लिया। आगे फ्रांसीसियों ने भूमि एवं समुद्र दोनों में घेरा डाल दिया।

ला बुर्डोने का विचार अंग्रेजों से फिरौती लेने का था। उसने 40 हजार पौंड लेकर मद्रास अंग्रेजों को लौटा दिया लेकिन डूप्ले ने नगर को पुनः जीत लिया। फ्रांसीसियों द्वारा मद्रास को घेर लिये जाने के बाद अंग्रेजों ने नवाब का संरक्षण चाहा। नवाब ने फ्रांसीसियों को मद्रास का घेरा उठा लेने को कहा लेकिन डूप्ले ने कूटनीति का प्रयोग करते हुये कहा कि वह मद्रास को जीतकर नवाब को सौंप देगा। मद्रास जीतने के बाद डूप्ले ऐसा नहीं किया अतएव युद्ध अवश्यंभावी हो गया। प्रथम कर्नाटक युद्ध का प्रमुख युद्ध सेंटथोमे का युद्ध (1748 ई.) फ्रांसीसी सेना एवं नवाब अनवरुद्दीन के बीच लड़ा गया। कैप्टन पैराडाइज के अधीन

एक छोटी फ्रांसीसी सेना ने जिसमें 300 फ्रांसीसी तथा 700 भारतीय सैनिक थे महफूज खाँ के नेतृत्व वाली नवाब की 10,000 की भारतीय सेना को पराजित कर दिया। इस युद्ध से यह स्पष्ट हो गया कि घुड़सवार सेना की अपेक्षा तोपखाना श्रेष्ठ है तथा एक छोटी अनुशासित फौज मध्यकालीन बड़ी फौज पर भारी पड़ती है। इस युद्ध का महत्व इस बात से भी है कि इससे नौसैनिक शक्ति की महत्ता स्थापित हुई।

यूरोप में ए-ला-शापेल की संधि (1748 ई.) के द्वारा आस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध जैसे ही समाप्त हुआ वैसे ही भारत में भी कर्नाटक का प्रथम युद्ध समाप्त हो गया। इस संधि से मद्रास अंग्रेजों को मिल गया तथा अमेरिका में लुईबर्ग फ्रांसीसियों को वापस मिल गया। इस तरह युद्ध के प्रथम चरण में दोनों दल बराबर रहे।

कर्नाटक के प्रथम युद्ध के बाद डूप्ले की साम्राज्यवादी भूख जाग गयी और उसने भारतीय राजवंशों के पारस्परिक झगड़े में भाग लेने की सोची। उसे यह सुअवसर शीघ्र ही मिल गया जब निजाम-उल-मुल्क आसफजाह की 1748 ई० में मृत्यु हो गयी और उत्तराधिकार के लिये वहाँ संघर्ष प्रारंभ हो गया। इसी समय चन्दा साहिब को मराठों द्वारा रिहा कर दिया गया।

निजाम का पुत्र नासिरजंग उसका उत्तराधिकारी बना परंतु उसके भांजे मुजफ्फरजंग ने उसके इस दावे को चुनौती दी। दूसरी ओर कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन तथा उसके बहनोई चन्दा साहब के बीच विवाद आरंभ हुआ। डूप्ले इस अनिश्चित अवस्था से लाभ उठाने की सोची तथा मुजफ्फरजंग को हैदराबाद का निजाम तथा चंदा साहब को कर्नाटक का नवाब बनाने के लिये अपनी सेना द्वारा सहायता देने का वचन दिया। इस तरह द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54 ई०) की पृष्ठभूमि तैयार हो गई।

मुजफ्फरजंग, चंदा साहब और डूप्ले की संयुक्त सेना ने 1749 ई० में कर्नाटक पर आक्रमण कर अम्बूर की लड़ाई में

अनवरुद्दीन को पराजित कर मार डाला। अनवरुद्दीन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी मुहम्मद अली ने भागकर त्रिचनापल्ली के दुर्ग में शरण ली। कर्नाटक का शेष भाग चन्दा साहब के अधिकार में आ गया। उसने अर्काट को अपनी राजधानी बनाकर शासन करना प्रारंभ किया। चंदा साहब ने फ्रांसीसियों को पांडिचेरी के पास का 80 गाँव उपहार में दिया। डूप्ले ने चन्दा साहब को त्रिचनापल्ली पर घेरा डालने को कहा।

इसी बीच अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों की बढ़ती शक्ति को देखकर निजाम पद पर नासिरजंग का पक्ष लिया। नासिरजंग ने अंग्रेजों की सहायता से दिसम्बर 1750 ई. में कर्नाटक पर आक्रमण कर दिया। जिंजी नदी के तट पर उसने चंदा साहब, मुजफ्फरजंग एवं फ्रांसीसियों की संयुक्त सेना को पराजित किया। लेकिन इसी समय नासिरजंग की सेना में विद्रोह हो गया जिसमें नासिरजंग मारा गया। डूप्ले ने तुरंत मुजफ्फरजंग को निजाम बना दिया। बदले में निजाम ने फ्रांसीसी कम्पनी को 50 लाख रुपये तथा सैनिकों को 5 लाख रुपये दिये। डूप्ले को 20 लाख रुपये तथा एक लाख रुपये वार्षिक आमदनी वाली जागीर मिली।

एक फ्रांसीसी अधिकारी बुस्सी अपनी संरक्षता में मुजफ्फरजंग को पांडिचेरी से ले जा रहा था तभी रास्ते में ही कुछ पठानों ने उसकी हत्या कर दी। बुस्सी ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुये निजाम के दूसरे बेटे सलावतजंग को निजाम बना दिया। अंग्रेजों के लिये यह मुश्किल था कि त्रिचनापल्ली से मुहम्मद अली को कैसे वापस लाया जाये क्योंकि चंदा साहब की फौज का घेरा वहाँ पड़ा हुआ था। इसी समय एक अंग्रेज क्लर्क क्लाइव ने यह सुझाव दिया कि यदि अर्काट पर घेरा डाला जाय तो चन्दा साहब त्रिचनापल्ली से हट जायेगा और हुआ भी यही। यहीं से क्लाइव की अंग्रेज कम्पनी में उन्नति का सिलसिला प्रारंभ होता है। 1752 ई. में मराठा सरदार मुरारी राव के सहयोग

से उसने अर्काट पर आक्रमण कर दिया और चन्दा साहब के पुत्र राजा साहब के नेतृत्व वाली सेना को पराजित कर दिया। इसी बीच मेजर लॉरेंस ने चंदा साहब से त्रिचनापल्ली का घेरा उठाने को कहा। चन्दा साहब त्रिचनापल्ली से भाग गया लेकिन उसे तंजौर के राजा ने मार डाला। इस प्रकार मुहम्मद अली कर्नाटक का नवाब बन गया। इसी बीच डूप्ले को फ्रांसीसी सरकार ने 1754 ई में वापस बुला लिया और गोडेहू को पांडिचेरी का गवर्नर बनाकर भेजा। गोडेहू ने आते ही अंग्रेजों से पांडिचेरी की संधि की।

1755 ई के पांडिचेरी संधि के द्वारा अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने मुगल सम्राट या अन्य भारतीय नरेशों द्वारा दी गयी उपाधियों को त्याग दिया तथा भारतीय नरेशों के झगड़ों में हस्तक्षेप न करने का वादा किया। दोनों कम्पनियों को अपने-अपने क्षेत्र वापस मिल गया। इस संधि में यह भी व्यवस्था थी कि बुस्सी हैदराबाद में ही रहेगा।

इस प्रकार कर्नाटक युद्ध का दूसरा दौर भी अनिश्चित रहा, परंतु स्थल पर अंग्रेजी सेना की प्रधानता सिद्ध हुई तथा उसका प्रत्याशी मुहम्मद अली कर्नाटक का नवाब बना। हैदराबाद में अभी भी फ्रांसीसियों की स्थिति सुदृढ़ रही तथा उन्होंने सूबेदार सलाबत जंग से उत्तरी सरकार के चार जिले मुस्तफानगर, एल्लोर, राजमुंद्री और चिकाकोल प्राप्त कर लिये।

पांडिचेरी की संधि अल्पायी थी क्योंकि इसका अनुसमर्थन दोनों देशों की सरकारों द्वारा किया जाना था लेकिन इसी बीच 1756 ई में यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध प्रारंभ हो गया जिससे पुनः अंग्रेज तथा फ्रांसीसी एक दूसरे के विरोध में आ गये तथा 1757 ई में एक दूसरे के स्थानों पर आक्रमण करना आरंभ कर दिया। दक्षिण में फ्रांसीसियों ने त्रिचनापल्ली को लेने का असफल प्रयास किया। इसके बावजूद कर्नाटक के अधिकांश भागों पर उनका अधिकार हो गया। 1757 ई में अंग्रेजों ने चन्द्रनगर, बालासोर, कासिम बाजार तथा पटना की फ्रांसीसी फैक्ट्रियों

पर अधिकार कर लिया।

युद्ध का वास्तविक आरंभ 1758 ई॰ में तब हुआ जब फ्रांसीसी सरकार ने काउंट डी लाली को भारत के सम्पूर्ण फ्रांसीसी प्रदेश के सैनिक एवं असैनिक अधिकारों से युक्त अधिकारी नियुक्त किया। लाली ने 1758 ई॰ में फोर्ट सेंट डेविड को जीत लिया। इसके पश्चात मद्रास को घेर लिया लेकिन अंग्रेजी नौसेना के आने के बाद उस पर घेरा उठाना पड़ा।

अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच निर्णायक लड़ाई वांडिवाश (22 जनवरी 1760 ई॰) में लड़ी गई। आयरकूट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने काउंट लाली के नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना को पराजित कर दिया। 1761 ई॰ में अंग्रेजों ने पांडिचेरी को भी अपने अधिकार में ले लिया और अगले वर्ष के भीतर फ्रांसीसी भारत में अपने सारे भू-भाग खो बैठे। युद्ध का समापन पेरिस संधि से हुआ।

अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों के बीच पेरिस संधि (1763 ई॰) पर हस्ताक्षर होते ही सप्तवर्षीय युद्ध (1763 ई॰) समाप्त हुआ। इस संधि के द्वारा फ्रांसीसियों को भारत स्थित उनके सारे केन्द्र वापस कर दिये गये लेकिन अब उनकी न तो किलेबंदी की जा सकती थी और न ही सैनिक वहाँ डेरे डाल सकते थे। फ्रांसीसी अब सिर्फ व्यापारी का कार्य कर सकते थे।

इस तरह तृतीय कर्नाटक युद्ध निर्णायक साबित हुआ। युद्ध में पराजय के फलस्वरूप भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य की स्थापना के सारे अवसर नष्ट हो गये और अब वे मात्र व्यापारी बन कर रह गये।

-o-